International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1131-1132

दलित कहानियों में आर्थिक असमानता

सजिता जे.
असिस्टेंट प्रोफेसर, नेहरु कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोयम्बत्तूर, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

आर्थिक असमानता

अगर भारत को 'सोने की चिड़ियां' कहा जाता था तो स्पष्ट है कि आरंभ में भारत देश की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। इतिहास के आधार पर हम जानते है कि इस सोने की चिड़ियां के प्रति विदेशी अकर्षित हुए और लूटकर ले गए। अगर मैं कहूं कि जिस प्रकार देश को विदेशियों ने लूटा उसी तरह भारतीय दलितों को चार्तुवर्ण व्यवस्था ने लूटा तो यह शायद ही गलत होगा। साहित्य ने यथा समय समाज के सामाजिक जीवन के साथ–साथ आर्थिक जीवन की दर्शाया है। साथ ही दुर्बलों के प्रति सबलों का दृष्टिकोण। साथ ही उनका शोषण आदि बातों की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की है। साहित्य के माध्यम से ही सामान्यतः समाज में देखने से यह पता चलता है कि जिसके पास धन की कमी हो समाज में उसका सम्मान भी कम ही होता हुआ दिखाई देता है। इस पर सुरेश धिंगड 50 का विचार है– ''आधुनिक आय वाले सदस्यों के प्रति व्यवहार और उत्तरदायित्व में न्यून आय वाले सदस्यों से वही अन्तर पाया जाता है जो समाज में अधिक आय और आय वालों के प्रति अधिकतर देखने सुनने में आता है।''[1] आधुनिक युग आर्थिक स्थिति से समाधान कारक दिखाई देता जरूर है लेकिन फिर गरीबों के यहां कमी नहीं है। आर्थिक कमी मनुष्य को किस तरह जीन के लिए मजबूर कर देती है इस बात को वही व्यक्ति जानता है जिसके पास आर्थिक साधनों की कमी होती है। धनवान व्यक्ति तो निर्धन व्यक्ति को उसी प्रकार दबोच देता है, जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को इसी आर्थिक असमानता ने दलित समाज की दयनीय दशा बनाई है। दलित समाज की विद्रूपता, विसंगति कुंठा गरीबी, बेकारी, बेरोजगारी, भोजन साथ ही वस्त्रों का अभाव, पारिवारिक विसंगति, ऋण ग्रस्तता, व्यसनाधिनता आदि अनेक प्रकार की समस्याओं को प्रस्फुटित करने में सहायता की है। साहित्य मानव जाति का हितैषी रहा है। साथ ही इस हितैषी ने समाज के हर एक दिशा का साक्षात्कार करवाया है। इसका उद्देश्य अगर सामाजिक बदलाव लाना कहेंगे तो गलत नहीं होगा। जब भी साहित्य ने किसी स्थिति का रेखांकन किया है उसमें जरूर सुधार की अपेक्षा रखी है। 'दलित साहित्य' वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध और उसके विपरीत सोच के लिए संबंधित समाज जो प्रतिबद्ध है। आज के सामान्य मनुष्य के जीवन और दलित जीवन में दुख दैन्य, अपमान आदि की व्यथा अधिक है। मराठी के वरिष्ठ लेखक बाबूराव बागूल कहते है कि–स्त्री, शूद्र अस्पृश्यों को सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन पर्याप्त नहीं दिखता। उदाहरण के लिए, अंग्रेज राज गया और स्वराज आया प्रजातंत्र आया। फिर भी अस्पृश्यता है और है आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक विषमता । अर्थ मनुष्य के विकास की चाबी है। इसी चाबी से व्यक्ति अपने विकास के दरवाजे खोल सकता है। कुछ एक अपवादों को छोड़कर यह चाबी बहुत काम दलित समाज के लोगों के हाथ लगी है। बचा हुआ दलित समाज का बड़ा हिस्सा इसके लिए 1. सं. पुन्नी सिंह, कमला प्रसाद, राजेन्द्र शर्मा – भारतीय साहित्य परिप्रेक्ष – पृ. सं. –59 51 तरसता रहा है। इसलिए दलितों का आर्थिक जीवन पहले से ही कमजोर ही रहा है। इसी कमजोरी के कारण दलित समाज को कई समस्याओं से गुजरना पड़ा है। मोहनदास नैमिशराय की 'मैं शहर और वे' कहानी में गरीबी के, अभिशाप से बुझते तथा बेरोजगारी का बोझ ना पड़ता है। पूंजीवादी व्यवस्था, शासन, ठेकेदार बिचौलिया आदि में दलित समाज नंगा, भूखा एवं अभिशप्त जीवन जीने को विवश है। कड़ी मेहनत करके व्यवस्थावादियों की झोली भरनेवाला यह दलित समाज दो जुन की रोटी तथा तन ण्डेबादार आज उनके आंदोलन को सही दिशा देने की जगह बियाबान में भटकने छोड़ दिया है। आर्थिक समस्या पर लिखित विपिन बिहारी की 'पुनर्वास' कहानी भी एक है। प्रस्तुत कहानी में आर्थिक समस्या के चलते वैरागी और सुमति के मकान बनाने का इच्छा पूरी नहीं हो जाती है। इस कहानी में गरीबी के दारुण दृश्य का चित्रण मिलता है।

1.नारायण राठोड़ – सूरजपाल चौहान को कहानियों में दलित जीवन – पृ.सं. –19 54 दलित आर्थिक दृष्टि से पिछड़ेपन का एक और कारण है। उनकी सोच तथा विद्या का अभाव। वैसे आज कल शिक्षा तथा आर्थिक क्षेत्र में दलित समाज ने अपनी प्रगति करना शुरू किया है। परंतु आज भी कुछ हिस्सों में अधिकांश दलित इससे पिछड़े नजर आते है। शिक्षा के क्षेत्र में योग्यता होने के बावजूद भी कभी–कभी पुरानी विचारधारा को मन में रखकर बेटा और बेटी के पता है। अधिकतर दलित ही गरीबी रेखा के नीचे पाए जाते है। चंदन अपने बेटे सूरज के इलाज के लिए पैसे जुटा नहीं पा रहा था। तब स्कूल का डोनेशन भी वापस मिलने की उम्मीद उसे नहीं थी। दोनों पति–पत्नी क्षेत्र के एम.पी.के पास पहुंच गए और उन्होंने एम.पी. जी से कहा कि – 'स्कूल प्रबंधक ने, प्रिंसिपल ने, मालिक ने मिलकर लूट लिया हमें।' तब वे बोले – 'पहले रसीद दिखाओ । पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी है।' चंदन के पास रसीद नहीं 61 थी। स्कूल वालों ने डोनेशन भरने की रसीद नहीं दी थी । इस बात पर एम.पी. बोले कि – 'आप इस तरह बीमारी, मौत और मजबूरी का नाटक मुझे मत दिखाइए । उठिए और अपने घर जाइए । मैं इस तरह के शब्दों से पिघलनेवाला नहीं हूं । इससे यह ज्ञान होता है कि चंदन चारों ओर से संकटों से घिरा है। बेटे का दाखिला करवाए कुछ दिन हुए थे। उसके बाद उसके इलाज के लिए पैसे जुटाना असंभव था। स्कूल का डोनेशन उसे वापस नहीं मिला। शहर के एम.पी. सहायता मांगने के लिए गए तो वहां से भिखारियां की तरह उन्हें भगाया गया। आप जैसे लोगों के शब्दों से मैं पिघलूंगा नहीं तुम जैसे लोग सिर्फ झूठा नाटक करते है। इससे यह ज्ञान होता है कि दलितों में गरीबी दीमक की तरह लगी रहती है। वक्त आने पर कोई भी उनकी मदद नहीं करता स्वतंत्रता

के पश्चात सरकार ने स्कूलों में अच्छी शिक्षा के लिए कई नियम बनाएँ गए थे । ऐसा सोचकर चंदन ने अपनी थोड़ी–सी जमीन बेचकर अपने बेटे सूरज का दाखिला स्कूल में डोनेशन देकर करवाया।

एक परेशानी दूर होते ही बेटे की बीमारी की परेशानी हो गई। चंदन के पास अस्पताल का बिल भरने के लिए पैसे नहीं थे। वह पहले ही गरीबी से तंग हो गया था। बेचैन ने लिखा है कि – 'बिल लेकर चंदन वापस घर पहुंचा। पढ़ा–लिखा आदमी था। इसलिए उसने बिल ठीक से ५ पैसे वह जमा नहीं कर सकता था। बिल को देखकर बेहोश होते होते उसने अपने 62 आप को संभाला तुरंत उसके मन में विचार आया कि ऐसी अवस्था में उसे कुछ हो गया तो उसकी पत्नी और बेटे का क्या होगा? इन बातों से कहानीकार ने दलितों की दयनीय दशा को दर्शाया है। हिंदी की दलित कहानी जहां एक ओर दलितों की आर्थिक दृष्टि से पिछड़ेपन का चित्रण करती है वही दूसरी तरफ ऐसी भी कहानियां है जिसमें दलितों ने शिक्षा प्राप्त करने परंपरागत गुलामी को ठोकर मारकर आर्थिक विकास भी पाया है। उदाहरण के लिए सूरजपाल चौहान की कहानी 'छूत कर दिया' में दलितों की प्रगति में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है। शिक्षा के जरिए उच्चतम पद पर पहुंचकर सुख वैभव को प्राप्त करनेवाले बिहारी लाल कैन आई. ए.एस. 'टिलू का पोता' कहानी में जनरल मैनेजर 'हरिसिंह', 'घाटे का सौदा', 'कहानी के लोग', के चेतराम कुरील 'नया पड़ोसी' कहानी का दत्ता परिवार आदि इसी किस्म के चरित्र है । उपर्युक्त विवेचित कहानियों के पात्र जाति के निम्न होने पर भी इनका जीवन आर्थिक स्थिति से काफी हद तक सुधरा हुआ लें।''

संदर्भ सूची

1. शरणकुमार निबाले–दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–पृ सं. 11, 12
2. डॉ. कल्पना गवली–प्रेमचंद तथा शैलेश माटियानी की कहानियों में दलित विमर्श–पृ. सं. 51
3. हरपाल सिंह –दलितसाहित्य की भूमिका–पृ. सं. 10
4. डॉ. सी. बालसुब्रहमण्यन–मैत्रेयी पुश्पा–पार्श्वीकृतों के पैरोकार–पृ सं. 17
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि–दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र –पृ. सं. 10
6. डॉ. बलवंत साधु जाधव–प्रेमचंद साहित्य मे ंदलित चेतना–पृ. सं. 2